International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताओं के संदर्भ में अध्ययन

विनीता

पी–एच डी छात्रा शिक्षाशास्त्र एम बी जी पी जी कॉलेज, हल्द्वानी कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखण्ड

शोध सारांश

उच्च माध्यमिक स्तर वह कड़ी है जहां पहुंचते ही छात्र शिक्षा के प्रति जागरुक होने लगते हैं इस स्तर में प्रवेश करने के बाद ही विद्यार्थी को अपने जीवन में कई समस्याओं एवं कठिनाइयों का सामना भी करना होता है। जैसे कि व्यवसाय से संबंधित सही निर्णय लेने में समस्या, अपनी रुचि का व्यवसाय चुनने में समस्या जो कि उनके आने वाले भविष्य में आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सुरक्षा तथा सहायता प्रदान करें। ऐसे कठिनाइयों से निपटने के लिए विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसाय क्षेत्रों की जानकारी होना आवश्यक हैं। जिससे कि मनोवैज्ञानिक तौर पर वह अपनी रूचि के अनुरूप व्यवसाय को चुनने में सफल हो सके किसी भी विद्यार्थी के लिए किसी एक विषय को पसंद करना तथा उसे आने वाले भविष्य में अपनाने में बहुत अंतर होता है साथ ही उच्च माध्यमिक स्तर में कि विद्यार्थी किशोर अवस्था में होते हैं सभी अपने व्यवहार विकारों से पीड़ित होते हैं उन्हें अपने व्यवहार को समझने और नियंत्रण रखने की समस्या होती है जिसका प्रभाव उनके व्यवसायिक रूचियों पर भी पडता हैं। अत: उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताओं के संदर्भ में अध्ययन को शोधकर्त्री ने अपने शोध विषय के रूप में चुना है।

संकेताक्षर –: उच्च माध्यमिक स्तर, व्यवसायिक रूचि, व्यक्तित्व आवश्यकता।

प्रस्तावना

उच्च माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा के लिए मार्गप्रशस्त करती है। यदि प्राथमिक शिक्षा ज्ञान प्राप्ति की आधारशिला है तो उच्च शिक्षा ज्ञान का अंतिम लक्ष्य हैं तो उच्च माध्यमिक शिक्षा इन दोनों के मध्य की कड़ी है। उच्च माध्यमिक शिक्षा स्वयं में पूर्ण इकाई है जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है। इसके अंतर्गत शैक्षिक व्यावसायिक तकनीकी, औद्योगिक, वाणिज्यिक तथा कृषि से संबंधित शिक्षा समाहित रहती है। उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा के बीच की एक कड़ी है। इस स्तर में प्रवेश करते ही छात्र विषयों का चयन करता है तथा उसके अंदर इन विषयों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होने लगती है। कई छात्र अपने रुचि के विषय की समझ रखने में असमर्थ होते है। उन्हें अपनी रुचि के विषय को समझने में कठिनाई होती है। इस प्रकार वे छात्र आगे बढ़कर अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं तथा उन्हें अपने व्यवसाय चयन करने में भी कठिनाई उत्पन्न होती है। छात्रों के व्यवसाय के चयन में उनके माता–पिता के शैक्षिक स्तर एवं उनके निवास का प्रभाव पड़ता है क्योंकि कभी–कभी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी बुद्धिमान होने के बावजूद भी सही व्यवसाय का चयन नहीं कर पाते है। इसके फलस्वरूप वे भविष्य में कुण्ठा का शिकार होने लगते है। सामान्यत: विद्यार्थियों से जब यह प्रश्न किया जाता है कि वह अमुक व्यवसाय क्यों चुनते हैं तो उनका उत्तर यह होता है कि उन्हें यह पसंद है। मनोवैज्ञानिक रूप से वही व्यक्ति अपने व्यवसाय में सफल हो सकता है जिसकी रुचि उसमें अधिक हो। प्रत्येक जीवन में रुचि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी व्यवसाय के लिए उनके अनुरूप व्यक्तित्व आवश्यकता का होना आवश्यक है अन्यथा व्यक्ति उस व्यवसाय में असंतुष्ट ग्रस्त हो जाता है अत: उस व्यवसाय के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने परिवेश या व्यवसाय के साथ अनुकूलन करता है।

अध्ययन के उददेश्य–:

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग की छात्राओं की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्रों की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–:

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही हैं।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग की छात्राओं की व्यवसायिक रूचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही हैं।
- उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्रों की व्यवसायिक रूचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही हैं।

शोध विधि –: प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या –: प्रस्तुत शोध कार्य में अल्मोड़ा जनपद के समस्त उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में पढ़ने वाले समस्त विद्यार्थियों को शोध जनसंख्या के रुप में सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श –: प्रस्तुत शोध न्यादर्श के रूप में जनसंख्या में से 120 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा चयन किया गया है।

उपकरण –:

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण के लिए एस• पी• कुलश्रेष्ठ व्यवसायिक रुचि प्रपत्र मानकीकृत प्रपत्र का प्रयोग किया गया है।
- व्यक्तित्व आवश्यकता का मापन करने हेतु मीनाक्षी भटनागर द्वारा निर्मित व्यक्तित्व आवश्यकता का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधियां –: शोध अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर उपयुक्त वर्णनात्मक सांख्यिकी मध्यमान, मानक विचलन एवं सहसंबंध परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन

तालिका 1

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

व्यवसायिक क्षेत्र	उपलब्धि की आवश्यकता	आक्रामकता की आवश्यकता	स्वायत्तता की आवश्यकता
साहित्यिक	0.197*	-0.128	0.041
वैज्ञानिक	0.005	-0.002	0.031
प्रशासनिक	0.189*	-0.167	0.047
वाणिज्यिक	0.150	-0.061	0.159
रचनात्मक	0.041	0.065	0.179*
कलात्मक	0.211*	-0.237**	0.087
कृषि	-0.068	0.118	0.092
प्रत्ययात्मक	0.070	-0.050	0.070
समाजिक	0.167	-0.257**	0.046
गृहकार्य	0.180*	-0.127	0.075

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान – .174
सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान – .228
df=118

उपरोक्त तालिका में विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता में सहसंबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता स्तर 118 पर साहित्यिक, प्रशासनिक, कलात्मक तथा गृह कार्य क्षेत्र में व्यवसायिक रुचि तथा उपलब्धि की आवश्यकता के मध्य 0.05 सार्थकता स्तर पर अल्प कोटि का धनात्मक सहसंबंध है। व्यवसायिक क्षेत्र वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, रचनात्मक,

कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक क्षेत्र में विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि तथा उपलब्धि की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया है। विद्यार्थियों की कलात्मक, सामाजिक क्षेत्र में व्यवसायिक रुचि तथा आक्रामकता की आवश्यकता के मध्य 0.01 सार्थकता स्तर पर निम्न कोटि का ऋणात्मक सहसंबंध है, शेष 8 व्यवसायिक क्षेत्रों साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, रचनात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक तथा गृह कार्य क्षेत्र में व्यवसायिक रुचि तथा आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। रचनात्मक क्षेत्र में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि तथा स्वायतता की आवश्यकता के मध्य 0.05 सार्थकता स्तर पर अल्प कोटि का धनात्मक सहसंबंध है।
शेष 9 व्यवसायिक क्षेत्रों साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, कृषि, कलात्मक, प्रत्ययात्मक, सामाजिक तथा गृह कार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता क्रमशः स्वायत्तता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तालिका 2

उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के छात्राओं की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

व्यवसायिक क्षेत्र	उपलब्धि की आवश्यकता	आक्रामकता की आवश्यकता	स्वायत्तता की आवश्यकता
साहित्यिक	0.069	-0.12	-0.125
वैज्ञानिक	-0.017	0.034	-0.127
प्रशासनिक	0.127	-0.11	0.064
वाणिज्यिक	-0.308	0.145	0.17
रचनात्मक	-0.106	0.023	0.15
कलात्मक	0.075	-0.144	-0.35
कृषि	-0.105	0.168	0.115
प्रत्ययात्मक	-0.104	0.131	0.014
समाजिक	0.18	-0.251	-0.023
गृहकार्य	-0.25	-0.069	-0.401*

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान – .361
df=28

उपरोक्त तालिका में कला वर्ग की छात्राओं की व्यावसायिक रुचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता में सहसंबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता अंश 28 पर कला वर्ग की छात्राओं की साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक, गृह कार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी 2 व्यक्तित्व आवश्यकता क्रमशः उपलब्धि की आवश्यकता, स्वायतता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती हैं।
गृहकार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी स्वायतता की आवश्यकता के मध्य सार्थकता स्तर 0.05 पर औसत स्तर का सार्थक सहसंबंध पाया गया, शेष 9 साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक, क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता क्रमशः उपलब्धि की आवश्यकता, आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तालिका 3

उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग की छात्रों की व्यवसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

व्यवसायिक क्षेत्र	उपलब्धि की आवश्यकता	आक्रामकता की आवश्यकता	स्वायत्तता की आवश्यकता
साहित्यिक	0.156	-0.114	-0.054
वैज्ञानिक	-0.105	0.048	0.016
प्रशासनिक	0.07	0.038	0.083

वाणिज्यिक	0.165	0.238	0.297
रचनात्मक	0.349	-0.085	0.21
कलात्मक	0.255	0.277	0.385*
कृषि	0.343	0.28	0.147
प्रत्ययात्मक	0.026	0.489**	0.027
समाजिक	0.097	0.164	0.13
गृहकार्य	0.21	0.077	-0.037

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान – .361

सार्थकता स्तर 0.01 पर तालिका मान – .463

df=28

उपरोक्त तालिका में कला वर्ग के छात्रों की व्यावसायिक रुचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता में सहसंबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता अंश 28 पर कला वर्ग की छात्रों की साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक, गृह कार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी उपलब्धि की आवश्यकता, में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

प्रत्ययात्मक क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी आक्रामकता की आवश्यकता के मध्य सार्थकता स्तर 0.01 पर औसत स्तर का सार्थक सहसंबंध पाया गया, शेष 9 साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि,, सामाजिक, गृहकार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

कलात्मक क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी स्वायतता की आवश्यकता के मध्य सार्थकता स्तर 0.05 पर औसत स्तर का सार्थक सहसंबंध पाया गया, शेष 9 साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, प्रत्ययात्मक, कृषि,, सामाजिक, गृहकार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

निष्कर्ष –

- साहित्यिक, प्रशासनिक, कलात्मक तथा गृह कार्य क्षेत्र में व्यवसायिक रुचि तथा उपलब्धि की आवश्यकता के मध्य अल्प कोटि का धनात्मक सहसंबंध है, जिससे स्पष्ट होता है कि उपलब्धि की आवश्यकता बढने से साहित्यिक, प्रशासनिक, कलात्मक तथा गृहकार्य क्षेत्र में रूचि बढती हैं, शेष व्यवसायिक क्षेत्र वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, रचनात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक क्षेत्र में विद्यार्थियों की व्यवसायिक रुचि तथा उपलब्धि की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया गया है।

  कलात्मक, सामाजिक क्षेत्र में व्यवसायिक रुचि तथा आक्रामकता की आवश्यकता के मध्य निम्न कोटि का ऋणात्मक सहसंबंध है, जिससे स्पष्ट होता है कि आक्रामकता की आवश्यकता बढने से साहित्यिक, प्रशासनिक, कलात्मक तथा गृहकार्य क्षेत्र में रूचि बढती हैं, शेष 8 व्यवसायिक क्षेत्रों साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, रचनात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक तथा गृह कार्य क्षेत्र में व्यवसायिक रुचि तथा आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

  रचनात्मक क्षेत्र में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि तथा स्वायतता की आवश्यकता के मध्य अल्प कोटि का धनात्मक सहसंबंध है। जिससे स्पष्ट होता है कि स्वायतता की आवश्यकता बढने से रचनात्मक ं क्षेत्र में रूचि बढती हैं, शेष 9 व्यवसायिक क्षेत्रों साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, वाणिज्यिक, कृषि, कलात्मक, प्रत्ययात्मक, सामाजिक तथा गृह कार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी स्वायत्तता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

- कला वर्ग की छात्राओं की साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक, गृह कार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी 2 व्यक्तित्व आवश्यकता क्रमशः उपलब्धि की आवश्यकता, स्वायतता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

  गृहकार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी स्वायतता की आवश्यकता के मध्य औसत स्तर का सार्थक सहसंबंध पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि स्वायतता की आवश्यकता बढने से गृहकार्य क्षेत्र में रूचि बढती हैं, शेष 9 साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक, क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता क्रमशः उपलब्धि की आवश्यकता, आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

- कला वर्ग की छात्रों की साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि, प्रत्ययात्मक, सामाजिक, गृह कार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी उपलब्धि की आवश्यकता, में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।
  प्रत्ययात्मक क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी आक्रामकता की आवश्यकता के मध्य औसत स्तर का सार्थक सहसंबंध पाया गया, शेष 9 साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि, सामाजिक, गृहकार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।
  कलात्मक क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी स्वायतता की आवश्यकता के मध्य औसत स्तर का सार्थक सहसंबंध पाया गया, शेष 9 साहित्यिक, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, रचनात्मक, प्रत्ययात्मक, कृषि,, सामाजिक, गृहकार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रुचि तथा उनकी आक्रामकता की आवश्यकता में कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ–

- शिक्षकों को चाहिए कि विद्यार्थियों की व्यक्तित्व आवश्यकता को जानने के अनुरूप ही व्यवसायिक विषयों का चुनाव करने में मदद करें तथा उन्हें भी उनकी रूचि व व्यक्तित्व को समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी अपनी व्यक्तित्व आवश्यकता के अनुरूप व्यवसायिक क्षेत्र का चयन कर सकते हैं।
- अभिभावकों को अपनी आकांक्षाएं बच्चों पर नही थोपनी चाहिए उनकी रूचि के अनुरूप व्यवसाय चयन तथा व्यक्तित्व बनाए रखने में सहयोग प्रदान करना चाहिए।
- पाठ्यक्रम निर्माताओं को भी चाहिए कि वे स्थानीय आवश्यकताओं एवं छात्रों की रुचि तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न व्यवसाय क्षेत्र से संबंधित विषयों एवं क्रियाओं को सम्मिलित करें जिससे छात्र अपनी रूचि के अनुरूप सीख सके तथा अपना व्यक्तित्व निर्माण कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Mangal, S.K.(2014) Education Psychology.PHI Learning private Limited.
2. Kumar, Ravindra (2015).“A Study of Vocational Interest Of UP Board Students”.
3. Kumar,N.(2015).“Kishoro ki Vyavsayik Ruchiyo Ka Adhayan”.Bhartiya Siksha Sodh Patrika (43-47).
4. भावना सीमा, (2005–2006). ‘‘माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अंतर्मखी एवं बहिमुखी व्यक्तित्व के आधार पर शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन’’ प्रकाशित लघु शोध प्रबंध (एम0एड0) कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल
5. साह तनुजा, (2015–2017). ‘‘माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचियों का उनके निवास तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन’’ अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध (एम0एड0) कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।
6. दीपिका नेगी (2012–2013).’’माध्यमिक स्तर के अनुसूचित तथा गैर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन’’ अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध (एम0एड0) कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

INTERNET SOURCES

(i) www. google.com
(ii) www.Shodganga.com